Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 16, Issue No. 2, February-2019, ISSN 2230-7540

भारतीय इतिहास निर्माण में पुरातात्विक सामग्री का योगदान

Sushila Devi*

M.A. in History, UGC NET

शोध सार – इतिहास का अर्थ है निश्चित ही ऐसा हुआ होगा। अतः इतिहास लेखन स्रोतों की सहायता से ही लिखा जा सकता है। सभी प्रकार के स्रोतों में पुरातात्विक स्रोत ही सबसे महत्वपूर्ण होते हैं क्योंकि ये निष्पक्ष रूप से इतिहास निर्माण में सहायता करते हैं। हमारे देश के प्राचीन इतिहास की जानकारी के लिए हमें पुरातात्विक स्रोतों की मदद लेनी पड़ती है। इस शोध पत्र के माध्यम से शोधार्थी 'प्राचीन भारतीय इतिहास लेखन में पुरातात्विक स्रोतों के महत्व को दर्शाना चाहता है। इसके अन्तर्गत मुख्यतः अभिलेख, स्मारक, भवन सिक्के (मुद्राएं)' किया है। इस लेख के जरिये प्राचीन भारतीय इतिहास के निर्माण में पुरातात्विक स्रोतों के महत्व के साथ-साथ इनकी सटीकता व निष्पक्षता को दर्शाने का प्रयत्न किया है।

मुख्य शब्दः पुरालेख शास्त्र, पुरातात्विक, अभिलेख, स्मारक, मुद्राएँ, प्रागैतिहासिक, स्तम्भ, ताम्र पत्र परंपरागत भारतीय विद्या पुरातात्विक, ऐतिहासिक साहित्य, ऋग्वैदिक काल, आदि।

----------x----------

शोध-प्रविधिः

इस शोध-पत्र के लिए शोध सामग्री अधिकांश रूप में द्वितीयक स्रोतों से ग्रहण की गई हैं। इसमें ऐतिहासिक विश्लेषण व वर्णनात्मक दृष्टिकोण के साथ-साथ शोधकत्र्ता ने अपने व्यक्तिगत अनुभवों को भी स्थान दिया है। शोध सामग्री प्रसिद्ध पुस्तकों, पत्र-पत्रिकाओं व समाचार पत्रों से प्राप्त की गई हैं।

प्राचीन भारतीय इतिहास के लिए ऐतिहासिक साहित्य का अभाव रहा है। ऋग्वैदिक काल से ही भारतीय इतिहास के लिए केवल एकमात्र स्रोत नगरों की खुदाई द्वारा प्राप्त की गई वस्तुएं हैं। उस समय का न तो कोई लिखित ग्रन्थ प्राप्त है और न ही उस समय की भाषा को समझा जा सकता है। वैदिक काल से चैथी शताब्दी केज्ञान के लिए हमें पूर्ण रूप से हिन्दू, बौध व जैनियों के धार्मिक ग्रंथों पर निर्भर रहना पड़ता है। भारत में हेरोडोटेस (यूनानी) व लिवी (रोमन) जैसे इतिहासकार नहीं हैं, इसलिए पाश्चात्य विद्वानों में भी यह धारणा बन गई थी कि भारत का कोई प्राचीन इतिहास नहीं है। भारतीय लोग अपने अतीत के गौरव को नहीं पहचानते हैं। महाभारत के अनुसार जिससे धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष की शिक्षा मिले वह साहित्यिक या धार्मिक इतिहास है। इसलिए भारतीय इतिहास सांस्कृतिक अधिक है और राजनीतिक कम।

प्राचीन भारतीय इतिहास को इतिहासकार तीन भागों में विभाजित करते हैं:

1. प्रागैतिहासिक काल
2. आद्यैतिहासिक काल
3. ऐतिहासिक काल

प्रागैतिहसिक काल के कोई लिखित साक्ष्य मौजूद नहीं है जिसमें मानव जीवन के सांस्कृतिक पहलू की कोई लिखित जानकारी नहीं मिलती है। इसे प्रागैतिहासिक काल कहा गया है।

हड़प्पाई सभ्यता आद्यैतिहासिक काल के अन्तर्गत आती है। क्योंकि इसमें लिपि संबंधी साक्ष्य तो हैं लेकिन वे अपाठ्य है। इसलिए यह आद्यैतिहासिक काल के अन्तर्गत रखा गया है।

जिस साहित्य के लिखित साक्ष्य उपलब्ध हैं जिसे पढा जा सकता है जैसे वेद, आरण्यक, उपनिषद, पुराण, कल्याण की राजतरंगणी, अष्टध्यायी, रेहला, तवकाते नासिरी, तुजके बाबरी, हिस्ट्री ऑफ इण्डिया आदि। यह ऐतिहासिक काल

www.ignited.in

कहलाता है। अर्थात् वैदिककाल से वर्तमान तक का समय ऐतिहासिक काल के अन्तर्गत आता है।

इतिहास निर्माण में सहायक उपलबध स्रोतों को तीन भागों में बांटा गया है -

1. पुरातात्विक स्रोत
2. साहित्यिक स्रोत
3. विदेशियों के विवरण

पुरातत्व सम्बन्धी स्रोतों का प्राचीन भारतीय इतिहास के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका है। प्रागैतिहासिक इतिहास के पुनर्निमाण के लिए इतिहासकार पूर्ण रूप से पुरातात्विक सामग्री पर निर्भर हैं। भारतीय ग्रंथों की रचनात्मकताकी दृष्टि से समय, सामाजिक, सांस्कृतिक जीवन के बारे में ठीक से ज्ञात नहीं है। साथ ही लेखक का खुद का भी दृष्टिकोण भी बहुत बार सही चित्रित करने में बाधक हो जाता है। जैसे चीनी यात्रियों ने भारतयी समाज की झंकी बौद्ध दृष्टिकोण से प्रस्तुत की है। अतः इनके विवरण को पूर्णतः ठीक नहीं माना जा सकता है। इसके अतिरिक्त ग्रंथों की प्रतिलिपि करने वालों ने अपनी इच्छानुसार अनेक प्राचीन प्रकरणों को छोड़ दिया और नए प्रकरण जोड़ दिए।

पुरातात्विक स्रोतों के द्वारा प्राचीन भारतीय इतिहास को एक नया तथा वास्तविक रूप दिया गया है। पुरातात्विक स्रोत साहित्यकार स्रोतों की अपेक्षा अधिक प्रमाणिक और सत्य प्रतीत होते हैं। पुरातात्विक स्रोतों से भारतवर्ष के अनेक तथाकथित अंध युगों पर प्रकाश पड़ा है। अनेकानेक संदिग्ध ऐतिहासिक मतों का निश्चित रूप से खण्डन मंडन हुआ है। पुरातत्व का महत्व इस बात से समझा जा सकता है कि आज एकमात्र इतिहास ही नहीं रहा बल्कि एकमात्र स्वतन्त्र विकास बन गया है। इतिहास निर्माण में यह शास्त्र हमारे समक्ष दो रूप में आता है। 1. प्रतिपादक के रूप में (निर्माता) 2. दूसरा समर्थक के रूप में अर्थात् (ग्रहणकर्ता)

प्रथम रूप में यह उन ऐतिहासिक तथ्यों को प्रस्तुत करता है जो हमें अन्य साधनों से विदित नहीं होते। उदाहरणार्थ समुद्र गुप्त की दिग्विजय का वर्णन विस्तार हमें एकमात्र उसके प्रयोग स्तम्भ लेख से ही विदित होता है। यदि यह स्तम्भ लेख न होता तो हम भारतीय इतिहास के एक अति महत्वपूर्ण गुप्त काल से अनभिज्ञ रहते। इस प्रकार हाथीगुफा (उड़ीसा) अभिलेख न मिलता तो हमें एक प्रतिभाशाली नरेश खारवेल का पता न चलता। दूसरे रूप में पुरातत्व हमें किसी नई वस्तु का ज्ञान नहीं कराता बल्कि यह अन्य साधनों से ज्ञात किसी न किसी वस्तु का समर्थन करता है। उदाहरणार्थ पतंजली के महाभाष्य के कतिपय वाक्यों से ऐसा प्रतीत होता था कि पुष्पमित्र शुंग ने कोई यज्ञ किया था। परन्तु एक व्याकरण ग्रंथ के एक दो वाक्यों के आधार पर इतना बड़ा निष्कर्ष निकालने में संकोच कर रहे थे। ऐसी संधिग्ध परिस्थिति में पुरातत्व ने उनकी शंका का समाधान किया। अयोध्या का अभिलेख मिला और उसने स्पष्ट स्वर में घोषित किया - 'द्विरश्वमेधयाजिनः सेनातेः पुष्पमित्रस्य'। इस प्रकार पुरातत्व ने पतंजलि के महाभाष्य के कथन को सिद्ध करते हुए यह कहा कि पुष्पमित्र शुंग ने अश्वमेघ यज्ञ किया था।

इतिहास के निर्माण में पुरातात्विक सामग्री को तीन भागों में बांटा गया है।

1. अभिलेख
2. स्मारक
3. मुद्राएं

पुरालेख शास्त्र

अभिलेखों के अध्ययन के पुरालेख शास्त्र कहते हैं। ये ऐतिहासिक जानकारी का महत्वपूर्ण स्रोत हैं। इसे ऐपिग्राफी भी कहा जाता है। अभिलेख मुहरों, पाषाण स्तम्भों, स्तूपों, ताम्रपत्र, मंदिरों की दीवारों, ईंटों, मूर्तियों आदि पर उत्कीर्ण किए गए हैं। पूरे भारतवर्ष में आरम्भिक अभिलेख पत्थरों पर लिखे गए हैं। ईसा की प्रथम शताब्दी में अभिलेख ताम्रपत्रों पर उत्कीर्ण किए गए हैं। इसी समय दक्षिणी मास में पत्थरों पर और मंदिरों की दिवारों पर अभिलेख उत्कीर्ण किए गए हैं। अनेकों अभिलेख संग्रहालयों में सुरक्षित हैं। दक्षिणी भारत के ज्यादातर अभिलेख मैसूर पुरालेख संग्रहालय में हैं।

आरम्भिक अभिलेख प्राकृत भाषा हैं और ईसा-पूर्व तीसरी शताब्दी के हैं। संस्कृत भाषा में अभिलेख ईसा की दूसरी शताब्दी में उत्कीर्ण होने प्रारम्भ हुए तथा चैथी एवं पांचवीं शदी के सर्वत्र अधिकारिक उत्कीर्ण किए गए हैं। इसी दौरान भी प्राकृत भाषा में अभिलेख उत्कीर्ण होते रहे हैं। प्रादेशिक (क्षेत्रिय) भाषा में अभिलेखों का आरम्भ 9वीं 10वीं शताब्दी में शुरू हुआ। मौर्य काल, मौर्योत्तर काल और गुप्त काल के अधिकांश अभिलेख 'कार्पस इन्सक्रिप्शनम इण्डिकेस्म' ग्रंथ माला में संकलित हैं।

हड़प्पा सभ्यता के अभिलेख भाव चित्रात्मक लिपि में हैं जो अभी तक पढ़े नहीं गए हैं। धौलावीरा से भी हमें अभिलेख प्राप्त हुआ है। भारत के प्राचीनत् अभिलेख जो पढे गए हैं अशोक के अभिलेख हैं। जिसे जेम्स प्रिंसेप नामक अंग्रेज ने 1839 में पढा है।

अशोक के अभिलेखों के अतिरिक्त कलिंग नरेश खारवेल समुद्रगुप्त प्रयाग प्रस्सति चन्द्रगुप्त द्वितीय का महरौली (दिल्ली), स्कन्तगुप्त का भीतरी स्तम्भलेख, रूद्रदमन का जूनागढ़, पुलकेशिन द्वितीय का एहोल आदि राजाओं के अभिलेख भी ऐतिहासिक दृष्टि से बहुत उपयोगी हैं। अभिलेखों से हमें राजाओं, प्रशासनिक, राजनीतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक स्वरूप की जानकारी मिलती है। जैसे ऐहोल अभिलेख से हमें पुलकोशेन द्वितीय की विजयों की जानकारी मिलती है जिसमें उसने कन्नौज के शासक हर्षवर्धन व पुल्लव नरेश को हरा दिया था।

इलाहाबाद के स्तंभलेख से समुद्रगुप्त की विजयों की जानकारी मिलती है तथा उसने सम्पूर्ण भारत पर अपना साम्राज्य स्थापित कर लिया था। इसकी जानकारी हरीषेण नामक कवि ने दी थी।

Dr. Flint के अनुसार उत्कीर्ण लेखों से प्राचीन भारत के राजनीतिक इतिहास का ज्ञान मुख्य रूप से प्राप्त किया गया है। उनके बिना ऐतिहासिक घटनाएँ तथा तिथियाँ निश्चित न हो पाती जो सामग्री भी हमें परम्परा, साहित्य, मुद्राओं, कलाभवनों या अन्य किसी साधन से प्राप्त होती है, वे सब उसको क्रमबद्ध करते हैं। परन्तु यह निश्चित रूप में नहीं भूलना चाहिए कि इन अभिलेखों की रचना राजकवियों के द्वारा की गई है। इन्होंने अपने संरक्षक राजाओं की सफलताओं या विजयों का वर्णन बढ़ा चढ़ाकर किया है।

कुछ अभिलेख हमें विदेशों से भी मिले हैं जैसे वैदिक काल के बारे में में बताये वाला अभिलेख मुख्य एशिया के बोगजकोई नामक स्थान से मिला है। यह लगभग 1400 B.C. का है। इसमें चार वैदिक देवता इन्द्र, वरुण, मित्र, नासत्य देवता नाम अंकित है। इसके अलावा चैथी शताब्दी ईसा पूर्व के ईरानियों के भारत पर आक्रमण की जानकारी भी हमें बहिस्तुन नाम लेख से मिलती है। इससे पता चलता है कि सिंध प्रांत दारयबाहु प्रथम के साम्राज्य का 20वां प्रदेश था। इससे। इससे उसे 360 टैलंट की आय प्राप्त होती थी। इस कथन की पुष्टि हमदन के स्वर्ण पत्र लेख और रजत पत्र लेख से भी होती है।

डॉ. वी.ए. स्मिथ का कहना है कि प्रारम्भिक हिन्दू समाज से संबंधित घटनाओं की तिथियों का जो ठीक-ठाक ज्ञान जो अभी तक प्राप्त हो सका है व मुख्य रूप से उत्कीर्ण साक्ष्यों पर आधारित है।

सारांश यह है कि नानाविध उत्कीर्ण लेख प्राचीन भारतीय इतिहास के अति महत्वपूर्ण एवं विश्वसनीय स्रातों में से एक हैं।

स्मारक एवं भवन

इतिहास में प्राचीन स्थापत्यकार, वास्तुकार और चित्रकार किसी भी लेखक व इतिहासकार से कम नहीं है। प्राचीन भारत के जो मंदिर, स्तूप, गुफाएं, मूर्तियां आदि पर चित्रादि मिले हैं जिसमें भारतीय जीवन शैली की छवि की प्रस्तुति हुई है। पाटलीपुत्र की खुदाई में चन्द्रगुप्त मौर्य के लकड़ी के महल के होने की जानकारी मिलती है। यह बिहार के 'कुम्माहर' नामक गाँव में मिले हैं। इसमें लकड़ी के राजप्रासाद के ध्वंसा वेशों को देखकर यह अनुमान लगाया जा सकता है कि जो कलाकृतियां प्रायः नष्ट हो गई हैं। किंतु अशोक के भारत वर्ष में पाषाण (पत्थरों) का उपयोग पर्याप्त मात्रा में दिखाई देता है। अतः अशोक काल व परवर्ती काल की बहुसंख्यक कलाकृतियां आज भी विद्यमान हैं। इनमें भारतीय इतिहास की अनेक प्रकार का ज्ञान प्राप्त होता है। जैसे सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक स्वरूप आदि।

मुद्राएं

मुद्राओं ने इतिहास निर्माण में बड़ी भूमिका अदा की है। इस कथन की प्रमाणिकता इस बात से होती है कि 206 B.C. से 300 A.D. तक का भारतीय इतिहास का ज्ञान हमें प्रमुखतयाः मुद्राओं की सहायता से ही प्राप्त होता है। मुद्राओं की महत्ता इतनी अधिक स्वीकार की गई है कि आज उनके अध्ययन के लिए एक पृथक और स्वतन्त्र विषय या शास्त्र 'मुद्राशास्त्र' जिसे न्यूमिस्मेटिक्स कहते हैं। वह अलग विषय बन गया है। प्राचीन सिक्के तांबे, चांदी और सीसे के प्राप्त होते हैं। पकाई गई मिट्टी के सांचे बहुतायत में प्राप्त होते हैं। अधिकतर ये सांचे कुषाण काल के अर्थात् ईसा की आरम्भिक तीन सदियों के हैं। प्राचीन काल में बैकिंग प्राणाली आधुनिक समय जैसी नहीं थी। इस कारण जन सामान्य अपना धन मिट्टी व कांसे के बर्तन में जमीन के नीचे खोदकर रख देते थे जो उनकी आवश्यकता व कष्टप्रद स्थिति में उपयोग में आ सके। इस प्रकार की अनेक विधियां जिनें भारतीय व विदेशी विशेषकर इन्डोग्रीक टकसालों में ढाले गए सिक्के हैं। देश के विभिन्न भागों में उत्खनन के दौरान प्राप्त हुई है। ये विधियों कोलकाता, मुम्बई, चेन्नई, जयपुर, पटना, दिल्ली, लखनऊ, कुरुक्षेत्र, झज्जर आदि के संग्रहालयों में सुरक्षित हैं। अधिकांश अधिक भारतीय भारतीय सिक्के नेपाल, बांग्लादेश,

www.ignited.in

पाकिस्तान, अफगानिस्तान व इंग्लैंड के संग्रहालयों में सुरक्षित हैं।

भारत में सिक्कों की प्राचीनता का स्तर आठवीं सदी ई.पू. तक है परन्तु नियमित सिक्के छठी शताब्दी ईसा पूर्व से ही प्रचलन में आए हैं। प्राचीनतम भारतीय सिक्कों पर किसी प्रकार का लेख नहीं है। उन पर अनेक प्रकार के चिह्न उत्कीर्ण हैं। ये आहत् सिक्के या पंचमाक्र्ड कोएंस कहलाते हैं। वैदिकोतर साहित्य में इसे कार्षापण भी कहा गया है। ये अधिकांशत चांदी के हैं। हिन्द युनानी शासकों ने सर्वप्रथम सिक्कों पर लेख अंकित किए हैं। लेखों से संबंधित राजा की सूचना प्राप्त होती है। सबसे अधिक तांबे, चांदी व सोने के सिक्के मौर्योत्तर युग के हैं। मुद्राओं की सहायता से संबंधित काल के धार्मिक विश्वास, कला, शासन पद्धति तथा साम्राज्य विस्तार व विजयों का ज्ञान प्राप्त होता है। कनिष्क की मुद्राओं से उसके बौद्ध धर्म के अनुयायी होने का पता चलता है। शक-पहलव युग की मुद्राओं में अधिक कांसा मिश्रित स्वर्ण मिलता है जिससे तात्कालिक आंतरिक अशांति तथा कमजोर आर्थिक स्थिति का ज्ञान होता है। कुषाण काल की स्वर्ण मुद्राएं सर्वाधिक शुद्ध स्वर्ण मुद्राएं हैं व गुप्तकाल में सर्वाधिक सोने के सिक्के जारी हुए हैं। मालव यौद्धेय आदि गणराज्यों के इतिहास की जानकारी हमें मुख्यतः सिक्कों से ही होती है। कभी-कभी मुद्राओं से राजाओं की व्यक्तिगत गुणों व रूचियों का पता भी चलता है। जैसे समुद्रगुप्त से उसके कुशल वीणावादक होने का पता चलता है। समुद्रगुप्त और कुमारगुप्त की अश्वमेघ शैली की मुद्राओं से अश्वमेघ यज्ञ की सूचना भी मिलती है। चन्द्रगुप्त द्वितीय की व्याघ्रशैली की मुद्राओं से उसकी पश्चिमी भारत के शकों की विजय की सूचना मिलती है। इस प्रकार मुद्राएं अर्थात् सिक्के प्राचीन भारतीय इतिहास निर्माण में महत्वपूर्ण योगदान देते हैं।

निष्कर्ष

उपरोक्त तथ्यों से यह प्रमाणित होता है कि पुरातत्व संबंधी सामग्री हमारे इतिहास निर्माण में बहुत सहायक है। प्राचीन भारतीय इतिहास के लिए पुरातात्विक सामग्री सर्वाधिक विश्वसनीय मानी गई है, क्योंकि साहित्यिक व विदेशी विवरण के स्रोत लेखकों का स्वयं का दृष्टिकोण व रूचि से प्रभावित होते हैं। उदाहरण के रूप में चीन के यात्रियों ने भारतीय समाज का वर्णन बौद्ध दृष्टिकोण से किया है जबकि पुरातात्विक स्रोत की ये सीमाएं नहीं हैं। ये ज्यादा सटीक जानकारी प्रदान करते हैं। अनेक संदिग्ध ऐतिहासिक मतों का इन पुरातात्विक स्रोतों की मदद से खण्डन-मण्डन हुआ है। इतिहास निर्माण का यह पहला नियम है। निश्चित सत्य के रूप में प्रतिपादित करने से पूर्व हमें अपने कथन पर पूरी तरह से अवलोकन किया है। प्राचीन भारतीय इतिहास में जहां पर ऐतिहासिक साहित्य का अभाव रहा है वहीं पर हमें पुरातात्विक अवशेषों का सहारा लेना पड़ता है। अतः प्रागैतिहासिक भारतीय इतिहास के पुनर्निर्माण में इतिहासकारों को पूर्णतः पुरातात्विक सामग्री पर निर्भर रहना पड़ता है। पुरातत्व शास्त्री पुरातात्विक साधनों की सहायता से प्राचीन इतिहास की एक विश्वसनीय झांकी प्रस्तुत करने में सफल हुए हैं।

सन्दर्भ सूची

1. डॉ. ए.सी. अरोड़ा, प्राचीन भारतीय इतिहास, पृ. 32
2. डॉ. विमचन्द्र पाण्डेय, प्राचीन भारत का राजनीतिक तथा सांस्कृतिक इतिहास, पृ. 18
3. प्रतियोगिता दर्पण, भारतीय इतिहास, पृ. 6
4. सिविल सिर्विसिज क्रोनिकल, भारतीय इतिहास
5. मनिक लाल गुप्त, इतिहास प्रतियोगिता साहित्य सीरिज, पृ. 10
6. डॉ. ए.एस. पाण्डेय, द प्राचीन भारतीय इतिहास, पृ. 20
7. किरण कम्पीटिशन्स टाइम्स, पृ. 5

Corresponding Author

Sushila Devi*

M.A. in History, UGC NET

sushilabhakhar23@gmail.com